Dr. Raj Gopal,
Assistant Professor (G/RT)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com

Topic:⇒ Spinoza: Substance
(स्पिनोजा : द्रव्य विचार)

स्पिनोजा अपने दर्शन का प्रारंभ निरपेक्ष द्रव्य से करते हैं। उनके अनुसार ईश्वर एक निरपेक्ष एवं परम द्रव्य है। इसी से संपूर्ण सृष्टि उत्पन्न हुई है। स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य वह है जिसकी सत्ता स्वतंत्र है तथा जिसका ज्ञान किसी दूसरे ज्ञान की अपेक्षा नहीं करता है। अर्थात द्रव्य अपने अस्तित्व एवं ज्ञान के लिए किसी दूसरी वस्तु पर आश्रित नहीं होती है। इस प्रकार से स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर ही परम द्रव्य है। वह एक अद्वैत, परम, स्वतंत्र, सबका कारण होते हुए भी स्वयं अकारण, स्वयंभू तथा स्वतः सिद्ध है। द्रव्य की उपरोक्त परिभाषा के आधार पर द्रव्य के निम्न लक्षण स्पष्टतः निगमित होते हैं।

(i) द्रव्य स्वतंत्र है। द्रव्य को स्वतंत्र कहने का तात्पर्य यह है कि द्रव्य सबका आधार होते हुए भी स्वयं निराधार है।

(ii) द्रव्य निरपेक्ष है। द्रव्य स्वयं अकारण होने के कारण सापेक्ष नहीं। जो कारण होते है उसे कारण पर आश्रित माना जाता है। अकारण होने से द्रव्य निरपेक्ष है।

Ajanta Milky
Scanned with CamScanner

(iii) द्रव्य अद्वितीय है। द्रव्य को एक से अधिक मानने से उसकी सत्ता सीमित होगी। अतः द्रव्य को स्वतंत्र मानने के लिए द्रव्य को अद्वितीय मानना आवश्यक है।

(iv) द्रव्य अपरिच्छिन्न तथा अपरिमित है। द्रव्य की सत्ता एक पूर्ण तथा स्वतंत्र होने से वह किसी पर आश्रित नहीं है। वह एक अनंत सत्ता है।

(v) द्रव्य स्वतः सिद्ध है। इसका अर्थ है कि द्रव्य ज्ञान का आधार द्रव्य स्वयं ही है। इसके ज्ञान के लिए किसी अन्य ज्ञान की अपेक्षा नहीं है। द्रव्य स्वयं अपना प्रमाण है।

स्पिनोजा द्रव्य को स्वतंत्र, निरपेक्ष एवं एकमात्र परमसत्ता माना है। निरपेक्ष द्रव्य ही ईश्वर है। इस प्रकार ईश्वर स्वतंत्र निरपेक्ष एवं अद्वितीय द्रव्य है। द्रव्य (ईश्वर) अन्तर्यामी है। उसी से सृष्टि का कण-कण अनुप्राणित है। इस प्रकार से द्रव्य (ईश्वर) जन में और जनकुछ द्रव्य के अन्तर्गत है। यह विचार स्पिनोजा को सर्वेश्वरवाद की ओर ले जाती है। सर्वेश्वरवाद (Pantheism) के अनुसार जनकुछ ईश्वरमय है और ईश्वर ही जनकुछ है।

स्पिनोजा एवं देकार्त के द्रव्य विचार में काफी मतांतर दृष्टिगत है। देकार्त के अनुसार द्रव्य दो प्रकार का है- स्वतंत्र एवं परतंत्र। ईश्वर स्वतंत्र द्रव्य है वही चित और अचित परतंत्र द्रव्य है। स्पिनोजा का मानना है कि देकार्त के द्रव्य विचार

Scanned with CamScanner

में होता है। यदि द्रव्य स्वतंत्र है तो चित् अचित् को द्रव्य की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। यदि द्रव्य स्वतंत्र है तो वह एक, अनंत, सार्वभौम एवं स्वनिर्भर होगा। एक से अधिक द्रव्य को स्वीकार करना द्रव्य की स्वतंत्रता को निषेध करना है। स्पिनोजा के अनुसार सापेक्ष द्रव्य वदतोव्याघात है। द्रव्य वही है जो स्वतंत्र है, अतः परतंत्र द्रव्य की सत्ता नहीं है। इस प्रश्न से स्पिनोजा ने देकार्त के द्रव्य संबंधी विचारों को सुदृढ़ बनाया। इसी कारण देकार्त का द्वैतवाद स्पिनोजा के अद्वैतवाद में बदल जाता है।

स्पिनोजा का द्रव्य विचार उपनिषद् के ब्रह्म के समान निर्गुण और निराकार है। लेकिन यहाँ विरोधाभास दृष्टिगत है। द्रव्य के गुणों से द्रव्य का संकेत होता है तो वह निर्गुण कैसे? इससे स्पष्ट है कि द्रव्य (ईश्वर) के दो स्वरूप है। पहला स्वरूप निर्गुण गुण इसके अनुसार स्पिनोजा का द्रव्य मन वचन से परे एक अद्वितीय एवं अनिर्वचनीय स्वरूप है। यह उपनिषद् के निर्गुण ब्रह्म के समान है। दूसरा स्वरूप सगुण है। स्पिनोजा का द्रव्य स्वयं निराधार होते हुए भी सृष्टि का आधार है। तात्पर्य यह है कि द्रव्य सृष्टिकर्ता भी है। उपनिषद् में सृष्टिकर्ता होना ब्रह्म का तटस्थ लक्षण माना गया है। यह लक्षण उपनिषद् के तटस्थ लक्षण के ही समान है।

स्पिनोजा का मानना है कि प्रत्येक वस्तु में अनंत गुण होता है। किसी वस्तु के कुछ गुणों का विवेचन करने पर उसके अन्य गुणों का निषेध हो जाता है। जैसे - जब हम कहते है गाय सफेद है, तो उसके

Scanned with CamScanner

लाल, पीला, हरा, नीला आदि रंगों का निषेध हो जाता है। इसी कारण स्पिनोजा का प्रसिद्ध कथन है- "प्रत्येक निर्वचन निषेधात्मक होता है।" (Every Determination is Negation.)। स्पष्ट है कि द्रव्य असीमित और पूर्ण है, इसलिए गुणों के आधार पर उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। अनंत गुणों से युक्त होने के कारण स्पिनोजा अपने द्रव्य को निर्गुण और अनिर्वचनीय कहा है। इसी कारण वे द्रव्य की व्याख्या अद्वैत वेदान्त एवं माध्यमिक बौद्धों की "नेति-नेति" की तार्किक पद्धति के आधार पर किया है।

स्पिनोजा के द्रव्य विचार के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि स्पिनोजा का द्रव्य एक तर्कमीमांसीय संप्रत्यय है। जिसके द्वारा विश्व की सारी वस्तुओं का निगमन किया गया है। इसकी तुलना सांख्य की प्रकृति से भी जा सकती है। सांख्य की प्रकृति से ही महत, अहंकार, मन, तन्मात्राएँ आदि का तर्कतः विकास होता है। परन्तु प्रकृति से स्वतंत्र पुरुष की सत्ता स्वीकार कर सांख्य द्वैतवादी है। इसके विपरीत स्पिनोजा द्रव्य के अन्तर्गत ही चेतन और विस्तार दोनों को सम्मिलित किया है। अतः स्पिनोजा द्रव्य को उपादान एवं निमित्त दोनों कारण मानता है। वह संपूर्ण विश्व को ईश्वर रूप (Natura Naturata) मानता है। जहाँ अरस्तू द्रव्य को तार्किक संप्रत्यय के रूप में एक महत्वपूर्ण कोटि मानता है। वहीं स्पिनोजा द्रव्य को विश्व का सारतत्व मानता है, इसी के द्वारा संपूर्ण विश्व की अभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार से स्पिनोजा का द्रव्य विचार देकार्त के द्वैतवाद को अद्वैतवाद में परिणत करता है।